बी.एस.एच.एफ़.-101

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2020 और जनवरी 2021 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.एच.एफ़.-101

पाठ्यक्रम शीर्षक : मानविकी और सामाजिक विज्ञान में आधार पाठ्यक्रम

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

बी.एस.एच.एफ़.-101: मानविकी और सामाजिक विज्ञान में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य
2020-2021

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी.
पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.एच.एफ़.–101

प्रिय विद्यार्थी,

जैसा कि आपको बी.डी.पी. की कार्यक्रम दर्शिका में बताया गया है आपको इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए एक अध्यापक जांच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) करना होगा।

सत्र	जमा करने की तिथि	कहां जमा करना है
जुलाई 2020 सत्र के लिए	31 मार्च 2021	पूरा किया हुआ सत्रीय कार्य अपने केंद्र के संयोजक के पास जमा करा दें।
जनवरी 2021 सत्र के लिए	30 सितम्बर 2021	

सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ लीजिए।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें :

सत्रीय कार्य करने से पहले ध्यान रखें : सामाजिक विज्ञानों में किसी भी तरह के लेखन के लिए चार सोपान आवश्यक हैं। ये हैं (क) योजना (ख) वस्तु चयन (ग) प्रस्तुतीकरण (घ) व्याख्या

क) **योजना** : आपसे क्या प्रश्न पूछा गया है और उत्तर में क्या लिखना है। इस पर विचार कीजिए। इकाइयों का ठीक तरह से अध्ययन कीजिए। कुछ अतिरिक्त जानकारी चाहें तो पुस्तकालय का उपयोग कीजिए।

यह देखें कि प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना है या 250 शब्दों में या सिर्फ 100 शब्दों में। बड़े प्रश्नों के लिए विवरणों के साथ व्याख्या भी करनी होगी। तीसरे प्रकार के प्रश्न के उत्तर में संगत विवरणों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

ख) **वस्तु चयन** : उत्तर देने के लिए आपको सही तथ्यों तथा विवरणों का चयन करना होगा। इसके लिए आप (i) अपनी इकाइयों से नोट्स लें, (ii) तथ्यों को ध्यान से देखें और उत्तर के लिए अनावश्यक विवरण निकाल दें, और (iii) उत्तर का पहला खाका लिख लें। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि आप उत्तर में क्या सूचनाएं/विवरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

ग) **प्रस्तुतीकरण** : अब आप उत्तर का दूसरा खाका तैयार करें। इससे आप अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त कर सकेंगे। आप यह भी जान सकेंगे कि दी गयी शब्द सीमा में आप बात कैसे कह सकते हैं।

उत्तर का तीसरा और अंतिम प्रारूप तैयार कीजिए और देखिए कि आपने सारी आवश्यक बातें अपेक्षित शब्द सीमा में प्रस्तुत की हैं या नहीं।

घ) **व्याख्या** : इतिहास लेखन में व्याख्या की प्रक्रिया का अनन्य स्थान है। आपकी योजना तथा वस्तु चयन में भी व्याख्या की झलक दिखाई देगी। संभवतः, शायद, क्योंकि, इसलिए, आदि शब्दों के साथ आपके वक्तव्य व्याख्या की झलक देते हैं। यहां आपको ध्यान रखना होगा कि आपके तथ्य आपके वक्तव्य का समर्थन करते हैं अथवा नहीं।

टिप्पणी : अगर आपके पास समय सीमित हो तो :

1) पहला प्रारूप तैयार करें, उत्तर की संगतता, शब्द सीमा, आदि पर ध्यान दें, और
2) अंतिम प्रारूप तैयार करें।

अब आप उत्तर लिखने के लिए तैयार होंगे।

बी.एस.एच.एफ़.–101 : मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में आधार पाठ्यक्रम
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.एच.एफ़.–101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एस.एच.एफ.–101/ए.एस.टी/2020–2021
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सामने लिखे हैं।

भाग 1: निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 500–500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. समाज के अध्ययन के तरीकों पर चर्चा करें। 20

2. क्या राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत हमारे संविधान के मूल सिद्धांत हैं? 20

3. वैश्वीकरण के मौजूदा चरण में शाति और विरोध/टकराव की प्रकृति कैसे बदल गई है? 20

4. औद्योगिक युग के बाद के समाज (post-industrial society) से आप क्या समझते हैं? 20

भाग 2: निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के लगभग 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।

5. हमारे संविधान के तहत दिए गए 'मौलिक अधिकारों' से आप क्या समझते हैं? 12

6. पुनर्जागरण काल (Renaissance) से आप क्या समझते हैं? 12

7. 'सामाजिक संरचना' से आप क्या समझते हैं? 12

8. वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित किया है? 12

9. एक कला के रूप में कथक की प्रकृति पर चर्चा करें। 12

10. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी की भूमिका पर टिप्पणी करें। 12

11. परिवार के कार्य एवं दायित्व क्या हैं? 12

12. सोच वाले जीव के रूप में मानव के विकास पर टिप्पणी करें। 12

भाग 3: निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों पर लगभग 100–100 शब्दों में लेख लिखें। 6+6

13. (i) लौह युग
    (ii) निरूपित जनजातियाँ
    (iii) सामाजिक परिवर्तन
    (iv) मिश्रित अर्थव्यवस्था